आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 344 ARYA SABHA MAURITIUS *2nd Oct. to 15th Oct. 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

प्रातःकालीन आहुति मन्त्राः

PRĀTAHKĀLĪNA MANTRĀH

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।
Om sūryo jyotir jyotih sūryah swāhā.
God, The Creator of the sun, is light and lustre. This oblation is intended for the Supreme Light.

ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।
Om sūryo varcho jyotirvarchah swāhā.
God, the Creator of everything that shines is really the highest form of energy.

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।
Om jyotih sūryah sūryo jyotih swāhā.
God is the light that illumines the celestial bodies.

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।
Om sajūrdevena savitrā sajurushasendravatya jushānah sūryo vetu swāhā.
May this sun ever function in unison with Almighty God and with the glorious dawn.
Grasp the fine particles that emanate from matter and diffuse them in all directions.

O.N. Gangoo (Dr)

स्वाध्याय

डॉ० उदय नारायण गंगू,ओ.एस.के, आर्य रत्न, प्रधान आर्य सभा

इस देश में आर्यसमाज ने अपने स्थापना-काल से अबतक विद्या के प्रचार-प्रसार में यथाशक्ति प्रयत्न किया है ।

स्वाध्याय से ज्ञान का प्रकाश प्राप्त होता है और अविद्यांधकार नष्ट होता है । स्वाध्याय उत्तम ग्रंथों का ही किया जाता है ।

स्वाध्याय की ओर प्रवृत्त करने के लिए आर्य सभा के दो पुस्तकालय हैं – एक 'ध्रुवानन्द पुस्तकालय', जो आर्य भवन में पाया जाता है और दूसरा 'कुलवन्ती झमन पुस्तकालय' पाई में।

सभा के दोनों पुस्तकालयों में वैदिक वाङ्मय पर आधारित हज़ारों पुस्तकें उपलब्ध हैं। हमारे पंडित-पंडिताओं और सुधी पाठकों के लिए निम्नलिखित पुस्तकों का स्वाध्याय बहुत ही आवश्यक हैं :

१. वेदामृतम् (सुखी गृहस्थ) दाम्पत्य जीवन सुखी कैसे हो ?, डॉ० कपिलदेव द्विवेदी
२. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका महर्षि दयानन्द सरस्वती – संस्कृतार्थ्याभाषाभ्यां समविन्वता
३. वैशेषिकदर्शनम् – सांख्यदर्शनम् विधोदयभाष्यम्
४. न्यायदर्शनम् विधोदयभाष्यम्
५. योगदर्शनम् (विधोदय भाष्यम्)
६. न्यायदर्शन का भाष्य
७. संस्कार चन्द्रिका
८. वैदिक योगसूत्र - पं० हरिशंकर जोशी
९. वैदिकयुग और आदिमानव - आचार्य वैद्यनाथ भाग २
१०. वैदिक युग और आदिमानव - आचार्य वैद्यनाथ भाग २
११. वैदिक प्रवचन - सुरेशचन्द्र वेदालंकार
१२. वेदान्त दर्शन - स्व० स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती
13. Rigveda Samhita Volume 1 - Volume 13
14. Yajur Veda Samhita Volume 1
15. Atharvaveda Samhita Volume 1-3
16. Samveda Samhita Volume 2
17. Critical Studies of the Mahabhasya (V.P. Limaye)
18. Vaidika Padanukrama Kosa Volume 1 Samhitas Sec 1, Pt. 1 (Second Edition)
19. Vaidika Padanukrama Kosa (BRA MANAS) Sec II, Pt. II (Second Edition)
20. Epoch in Hindu Legal History by (PR V.C. Sarkar)
21. Rig. Veda 1 -12 Volume (Complete)
22. Yajurveda 1-3 Volume (Complete)
23. Samveda 1-2 Volume (2 Volume Complete)
24. Atharvaveda 1-5 Volume (Complete)
25. Atharvaveda - Translated by Acharya Vaidyanath Shastri
26. ऋग्वेद भाष्यम् Rigveda Humanitys Oldest Scripture
27. Rig Veda Samhita First Ashtaka - 121 Hymns Text Word Meaning and Translation Volume 3 by Dr R/L/ Kashyap
(i) The Rigveda Volume 3 & Mandalam 1 Suktam 137 - Mandalam 3 Suktam 32 Commentary in Sanskrit and with Hindi Notes
(ii) The Rigveda Volume IV Mandalam 3, Suktam 33, Mandalam 5 Suktam 45 'Pearls of Vedas' वेद के मोती तीन – भाषाओं में काव्यानुवाद, हिन्दी, अंग्रेज़ी तथा उर्दु
28. The Holy Vedas, A Golden Treasury The Golden Book of Vedas
29. On the Vedas / A clue to understand the Vedas Swami Vidyanand Saraswati
30. A Comparative & Analytical Study of the Vedas by R. Vedalankar
31. The Vidhi Viveka of Mandana Misra : Understanding Vedic injunctions
32. The Vedic Culture

स्वाध्याय-प्रेमी जन उपर्युक्त पुस्तकों को हमारे पुस्तकालयों से प्राप्त कर सकते हैं ।

सम्पादकीय

विश्व खाद्य-पदार्थ दिवस

जीवित रहने के लिए प्रत्येक प्राणी को आहार की अति आवश्यकता होती है। शुद्ध और सात्विक आहार ग्रहण करने से शरीर स्वस्थ रहता है। हमारी बुद्धि, हमारे विचार, मन तथा आचरण पवित्र होते हैं। हमारा भोजन जितना संतुलित, पौष्टिक तथा प्रकृति अनुकूल होता है, उतना ही हमारे लिए लाभकारी होता है।

परमात्मा द्वारा प्राप्त शुद्ध वायु, पवित्र जल और अग्नि के पश्चात् खाद्य-पदार्थ ही हमारे शरीर के मुख्य आधार माने जाते हैं। अन्न के बिना हम शक्तिहीन होकर भूख से तड़पने लगते हैं। शरीर में रक्त के अभाव से कमज़ोरी आने लगती है और तरह-तरह के रोग सताने लगते हैं। इसीलिए हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमें सदा बल दायक अन्न प्राप्त होता रहे और अनाज पैदा करने वाले किसान स्वस्थ रहे ।

हमारे देश में कृषि मन्त्रालय द्वारा खाद्य-उत्पत्ति पर विशेष ध्यान दिया जाता है, परन्तु सभी आवश्यक अनाजों का उत्पादन नहीं हो पाता है, इसीलिए हमारी सरकार विदेशों से खाद्य-पदार्थों का आयात करती है। हमारा आहार विदेशी खाद्योत्पादकों पर निर्भर रहता है। अगर किसी कारणवश एक दिन खाद्य-पदार्थों का अभाव हो तो भूख से तड़पकर मर सकते हैं। इसी कारण प्रत्येक नागरिक को अनाजों के पैदावार में तथा दूध के उत्पादन में पूरा ध्यान देना चाहिए। हम अपने खेतों में खाद्योत्पादन करने की आदत डालेंगे और पशुपालन पर ज़ोर डालेंगे तो अवश्य हम संकट के समय में अपनी जान बचा पाएँगे।

हम तो यहाँ सुगमता पूर्वक आहार ग्रहण कर रहे हैं, मगर कई अफ़्रीकी देशों में लाखों आदमी भुखमरी का शिकार हो रहे हैं। यही सोचकर हमें अन्न का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए अन्यथा भोजन का नाश करने से उन भूखे लोगों के प्रति अत्याचार है। हमेशा यह सोचना चाहिए कि आहारों का नाश करना महापाप है।

आज के इस विज्ञान और टकनीकी युग में बहुत से लोग अपनी नादानी के कारण पर्यावरण को दूषित कर रहे हैं जिससे आकाश-मण्डल में भारी दुष्प्रभाव पड़ने लगा है तथा जलवायु में परिवर्तन आने लगा है। कभी तेज़ गरमी सताने लगती है तो कभी कड़ी ठण्ड पड़ जाती है। कई देशों में अनावृष्टि के कारण खाद्योत्पादन में बाधाएँ उपस्थित हो रही हैं जिन कारणों से अनाजों की कमी महसूस हो रही है। अब इस गम्भीर समस्या का हल ढूँढ़ना अनिवार्य हो गया है। अन्यथा भुखमरी की शंका है।

विश्वमंडी में खाद्य पदार्थों की कमी होने से सभी उपभोक्ता पीड़ित हैं, ऐसी गम्भीर स्थिति में हमारी सरकार अनाजों के पैदावार एवं गौपालन में पूरा ध्यान दे रही है ताकि देश के नागरिक अनाजों के उत्पादन में अपनी रुचि दिखाएँ और सरकार की आर्थिक स्थिति में भी सुधार ला सके।

इस साल कृषि मन्त्रालय द्वारा विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर Domaine Les Pailles में आगामी १५ और १६ अक्टूबर और Mahebourg Waterfront में अगले २२ और २३ अक्टूबर २०१६ को खाद्य पदार्थों की प्रदर्शनी (Exhibition) लगाने जा रहा है। जहाँ पर स्थानीय खाद्य पदार्थों की बिकरी होगी। उस अवसर पर हमारे खेतिहर, पशुपालक और बाग़बान कम दामों में अपने सामान बेचेंगे। उस समारोह में स्थानीय पैदावारों की जानकारी हमें प्राप्त हो सकेगी और खाद्योत्पादन के लिए प्रोत्साहन भी मिलेगा। इस मौक़े से लाभ उठाकर आप अवश्य ही उस समारोह में जाएँ ताकि आप भी प्रोत्साहित हो सके।

यह ध्यान रहे कि भोजन हमारी शारीरिक रक्षा के लिए मुख्य आधार है। अतः जीवित रहने के लिए भोजन का प्रबन्ध करना हमारा परम कर्तव्य है। परमात्मा की ऐसी कृपा हो कि हमें कभी अन्न की कमी महसूस न हो।

बालचन्द तानाकूर

गतांक से आगे

साधु रामनारायण

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा मॉरीशस

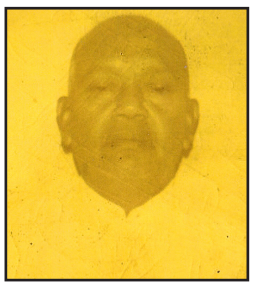

उनकी भेष-भूषा और बिना जूते का नंगा पाँव चलना और अपने लिए कुछ न रखना साधारण जनता को भाने लगा। धीरे-धीरे उनकी साधारण भाषा का असर गाँव के लोगों पर पड़ने लगा। पर कठिनाई इसमें यह थी कि साधु जी एक गाँव में एक ही रात्रि रहते थे। प्रातः होते ही वे दूसरे गाँव के लिए निकल पड़ते। उनके सामने गम्भीर समस्या थी दिन का भोजन प्राप्त करना क्यों प्रायः गाँव के सभी लोग काम पर निकल जाते और गृहनियाँ अनजान साधु को कैसे अतिथि मान सकतीं कहीं फल प्राप्त हो गया तो पेट की आग बूझी पानी और फल भी अनजान आदमी को प्राप्त नहीं होता। थकान मिटाने के लिए मध्यान्ह में गाँव के बाहर किसी बड़े दरखा की छाया में बैठ जाते और आराम फ़रमा लेते। दिन ढलते जब मज़दूर लोग घर वापस आ जाते तो वे गाँव के किसी परिवार के यहाँ आकर डेरा डालने और अपने आने का उद्देश्य समझाते और अगर स्वीकृति मिलती तो गृहस्थ के परिवार से बातें करते और उपदेश देते।

स्थान-स्थान पर टिककर वे कभी पढ़ाने लगते और बदले में भोजन आदि का प्रबन्ध गाँव वाले या एक परिवार कर देता। कभी कभी तीन-तीन चार-चार मास रहकर पढ़ाते नवजवान-नवयुवतियों को। कहीं अक्षर ज्ञान कराते और कहीं सामाजिक मूल्यों की शिक्षा देते। हम मोरिशस के कुछ गाँवों के नाम गिनाना चाहेंगे ताकि उनकी जीवन यात्रा के सम्बन्ध सही ज्ञान सके – उदाहरण के लिए ग्राँ साब, मारी जानी, कात सेर, ग्राँ बे, स्वाज़ी पोस्त दे फ्लाक, काँड़िचिये लेसपेरांस त्रेबूशे, जुंवांस देपिने आदि गाँव में रहे।

जब अपने पर निर्भर होकर कार्य कर दिये तो १९४६ से वे आर्य परोपकारिणी सभा के अन्तर्गत कार्य करने लगे। मार्ग व्यय के सिवा वे धन नहीं लेते थे। जो दक्षिणा वगैरह मिलते तो वे सभा को सुपुर्द कर देते थे। मातृ सभा के भवन के निर्माणार्थ आपने टापू भर में भ्रमण करके लगभग एक हज़ार रुपये इकट्ठे करके दिये थे। आपकी निज खर्च की रक़म बहुत ही न्यून होती थी। सभा आपको जीवन निर्वाह के लिए जो उचित समझती थी दे देती थी। याद रहे कि तब तक भारतीयों को धार्मिक भत्ता नहीं मिलता था। जबकि गैर भारतीय धार्मिक संस्थाओं को पूरा भत्ता मिलता था। हमारी धार्मिक संस्थाओं को अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ता था।

आर्य सभा से साधु रामनारायण को एकाएक अनबन हो गया और वे पुनः स्वतन्त्र प्रचारक के रूप में सेवा कार्य करने लगे। उनका निजी अनुभव था कि सभा से सम्बद्ध न होकर अच्छा कार्य कर सकना सम्भव है। पर यह सत्य नहीं है। आदमी को सामाजिक कार्य के लिए परतन्त्र होना चाहिए।

१९५३ के अन्त में आपने फिर से आर्य सभा मोरिशस में प्रवेश पाया, मृत्यु पर्यन्त सभा के अन्दर रह कर काम किया और सभा द्वारा किये जा रहे अच्छे कार्यों को देखते हुए जो उनकी बपौती धरोहर भी लगभग १२ हज़ार की जायदाद सभा को दान में दे दी। लगभग उतनी जायदाद का भाग अपने मामा और अन्य सम्बन्धियों को दे दिया। खाली अपना शरीर लेकर पुनः समाजोन्नति के कंटका कीर्ण पथ पर चल पड़े। त्यागी व्यक्ति के पीछे लोग चलने को तैयार होते हैं। समाज का आप पर अटल विश्वास हो गया। कोने-कोने से आपकी माँग आने लगी। ऋषि दयानन्द का संदेश आप बड़ी ओजस्वी भाषा में देने लगे। आप सभा द्वारा आयोजित हवन-यज्ञ, साप्ताहिक अधिवेशन, खासकर हिन्दी पाठशाला के वार्षिकोत्सवों में उपस्थित होने लगे। उत्सवों में चंदा अपील करने की आपकी शैली निराली थी। सभी लोग खुशी-खुशी कुछ न कुछ दान दे ही देते थे।

अपनी दान दी हुई ज़मीन पर आपने अपील की हुई रक़म से एक विशाल दयानन्द भवन का निर्माण करवाया। आपकी ही प्रेरणा से पाम्प्लेमूस निवासी स्वामी हरिनाथ बादू ने सात-आठ हज़ार की भूमि आर्य सभा को दान में दे दी जिस पर विरजानन्द भवन के निर्माण के लिए कार्य शुरू हुआ। कुछ सामान खरीदे गए लेकिन समाज में मतभेद के कारण काम रुक गया। काँ इच्ये, ग्राँ बे आदि गाँवों में भी भवन बनवाने की पहल का श्रेय आप ही को जाता है। तात्पर्य यह हुआ कि आपने निस्वार्थ भाव से कार्य किया।

भारत से आये हुए विद्वानों, आचार्यों, पंडितों एवं सन्यासियों के सम्पर्क में आप सदा रहे। जैसे पं० ऋषिराम, स्वामी नारायणानन्द, स्वामी महात्मा आनंद भिक्षु, स्वामी आनन्द, स्वामी अभेदानन्द, स्वामी ध्रुवानन्द, स्वामी अखिलानन्द आदि।

आज साधु रामनारायण हमारे बीच नहीं है उनका शरीर तिरोहित हो गया पर उनकी आत्मा हमें सदा-सर्वदा प्रेरणा देती रहेगी।

गुरु विरजानन्द के जीवन पर आधारित लेख है

देवनारायण कोन्हाई

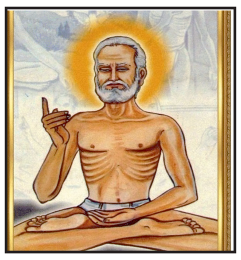

स्वामी विरजानन्द जी का जन्म (संवत १८३५ में पंजाब में गंगापुर ग्राम में हुआ था। इनके पिता नारायणदत्त था। वे सारस्वतः ब्राह्मण थे।

स्वामी जी के पूर्व नाम का पता किसी को नहीं, पर वे विरजानन्द नाम ही से परिचित रहे। वे पाँच वर्ष की आयु में अपनी आँखें खो चुके थे, इसलिए लोग उन्हें सुरदास, स्वामी, अथवा धृतराष्ट्र कहते थे। मथुरा वासी उन्हें दण्डी जी कहा करते थे।

जब विरजानन्द जी पाँच वर्ष की आयु में थे! तब अपने पिता से ही व्याकरण पढ़ना आरम्भ किया। विरजा नंद को किसी पाठशाला में नहीं भेजा गया। थोड़े दिन बाद उनके माता पिता का देहान्त हो गया। कुछ दिनों तक अपने भाई के आधीन रह कर देखा। उनको वहाँ रहना ठीक न लगा।

छोड़कर वे ऋषिकेश की ओर चले गये। उस समय वे चौदह वर्ष की आयु के हो गये थे। उस समय उस ईश्वर का आश्रय लेकर एकान्त स्थान में जाना चाहा उनको ऋषिकेश पहुँचने के लिए बहुत कठिनाई सहनी पड़ी। उन्होंने यहाँ पर रहकर गायत्री मन्त्र जपना आरम्भ किया। घण्टों गायत्री का जप करते रहे। कभी गायत्री मन्त्र को ध्यान में रखने में रात बीत जाती थी। थोड़े समय सोकर प्रातः ही स्नान के पश्चात् गंगा जल में बैठकर काफ़ी समय तक गायत्री का जप करते थे। गाँव के लोग इस तरह की तपस्या करते देखकर सोचते थे कि यह व्यक्ति किसी वर की खोज में पड़ा है।

विरजानंद ऋषिकेश पहुँचकर बड़े परिश्रम के बाद वन में एक प्रर्णकुटी तैयार की। कई बार भयंकर पशुओं ने उनकी कुट्टी तोड़ दी। पर विरजानन्द पुनः बनाकर उसी में रहते थे। वे वहाँ कंदमूल खाकर जीते थे। कभी कभी मन्दिरों में जाकर भोजन कर लेते थे। एक दिन रात में सोते समय उन्हें सुनाई दिया – *'तुम्हारा जो कुछ होना था वह हो चुका'*। अब तुम यहाँ से चले जाओ। विरजानंद उठकर इधर-उधर देखने लगे पर वहाँ कोई नहीं था। उस दिन के बाद देव वाणी समझकर दूसरे गाँव चले गये। वहाँ उनकी गाँव में एक संयासी से भेंट हुई। जिनका नाम पूर्णाश्रम था। आप महान् पण्डित थे। विरजानंद जी ने इन्हीं से शिक्षा-दीक्षा ली। तभी से आप स्वामी विरजानंद कहलाए।

वैसे तो पहले विरजानन्द जी ने अन्य गुरु से शिक्षा ली थी क्योंकि उन्होंने अपनी पुस्तक शब्द-बोध में अपने को गौरीशंकर-शिष्य लिखा। परन्तु उन्होंने पूर्णाश्रम जी से भी बहुत कुछ पढ़ा। पर अब भी लोगों में शंका हो सकती है कि पढ़ने में विरजानन्द जी चक्षु-हीन होने पर पढ़ने में तने सफल कैसे हो पाये? बात यह है कि स्वामी विरजानन्द जी की स्मरणशक्ति, धारण-शक्ति और मननशीलता भी तीव्र थी।

विरजानन्द जी में एक भारी खूबी थी कि पढ़े हुए विषयों पर बहुत बहुत मनन करते थे। और शिष्यों को पढ़ाते थे। जो पढ़ाते थे सही रूप में पढ़ाते थे। इसलिए जीवन में एक सफल अध्यापक भी बने। काशी के विद्याधर पण्डित के साथ आपने अध्ययन किया। काशी में व्याकरण के चर्चा की। वहाँ अनेक शिष्य पढ़ने लगे। बाद में जब वे मथुरा में आए अनेक शिष्यों को पढ़ाया करते थे। अन्त में एक दिन संसार के जो बड़े गुरु बने, वे भी गुरु विरजानन्द के शिष्य हुए थे। जो स्वामी विरजानन्द जी से सारे संसार को जगाने की प्रेरणा पाये थे। आज उन्हीं के आदेश पाकर महर्षि दयानन्द दुनिया में वैदिक धर्म को फैलाया।

स्वामी विरजानन्द अपने हृदय की दिव्य चक्षु संसार को प्रकाश में वैदिक धर्म का पुनः जन्म दिया।

जय, जय, जय वैदिक धर्म हमारा प्यारा।
गुरु विरजानन्द की कृपा से महर्षि दयानन्द,

१३ अक्टूबर सन् १९०७

एस. प्रीतम

अक्टूबर मास की १३ जुलाई हमें उस २६ वर्ष के तरुण की याद दिलाती है जिसे हमारे देश के बच्चे-बच्चे, जवान और वयोवृद्ध मणिलाल डॉक्टर नाम से जानते हैं और जिनके प्रति हम अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते अघाते नहीं ।

मणिलाल मगनलाल का आगमन हमारे देश में १३ अक्टूबर सन् १९०७ में हुआ था। वे यहाँ करमचन्द गांधी द्वारा भेजे गये थे। वे हमारे यहाँ मज़दूरों और छोटे किसानों की शुद्धि लेने आये थे। करमचन्द गांधी ने अपने लघु प्रवासकाल के दौरान देखा था कि भारतीय समुदाय की स्थिति दयनीय थी। मणिलाल का ठहराव हमारे यहाँ चार वर्ष से अधिक न रहा। अपने इस छोटी सी अवधि में मज़दूरों और छोटे किसानों के जीवन स्तर को उठाने में कोई कसर बाक़ी न छोड़ी। बैरिस्टर होने के कारण यहाँ की कचहरी में मज़दूरों के प्रति अन्याय के कई मामले लेकर गये। उसके अन्तर्गत उन्हें कई कमियाँ दिखाई दीं जिनके कारण मज़दूरों और खेतिहरों को न्याय नहीं मिल रहा था। पहली रुकावट उनकी भाषा सम्बन्धी कठिनाई थी। वे भोजपुरी के सिवा और कोई भाषा बोल नहीं सकते। हिन्दी समझते थे पर उसमें अपनी शिकायतों का इज़हार नहीं कर सकते।

मणिलाल डॉक्टर का सब से अहम सहयोग निष्क्रिय आर्यसमाज में प्राण फूँकने का रहा। यद्यपि वे जन्म जात वैष्णव थे पर उन्होंने भारत में आर्यसमाज के अच्छे कार्यों को देखा था, इसलिए उन्होंने सोचा कि तत्कालीन समाज में जागृति लाने में आर्यसमाज को छोड़कर और कोई संस्था नहीं हो सकती।

कई भारतीयों ने आर्यसमाजी न होते हुए भी आर्यसमाज द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना की है जिनमें हम एक उदाहरण पेश करते हैं। वे थे भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में अग्रगण्य भूमिका निभाने वाले लोक मान्य तिलक जो गरम दल के नेता थे, उन्होंने स्वामी दयानन्द द्वारा बनाये गये सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास से प्रभावित होकर स्वातन्त्र्य के महामंत्र का राजनीतिक मंत्र से उद्घोष किया था और भारतीयों को बताया था, 'स्वतन्त्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मैं उसे लेकर रहूँगा ।'

मणिलाल डॉक्टर जब चार साल बाद मोरिशस से निराश होकर फीजी गए थे तो वहाँ भी जाकर आर्यसमाज को सहयोग दिया था।

अगर हमें यहाँ पहला भारतीय मूल का बैरिस्टर मिला रामखेलावन बुधन के रूप में और पहला धार्मिक नेता पं० काशीनाथ किस्तो तो सारा श्रेय जाता है मणिलाल डॉक्टर का।

क्वीन विक्टोरिया आर्य महिला समाज को बधाई एवं शुभकामनाएँ

पंडिता प्रेमदा लीलकंठ, शास्त्री

पच्चीसवें साल के संदर्भ में क्वीन विक्टोरिया आर्य महिला समाज, शाखा नं० २५९ ने बड़े सुन्दर रूप से यज्ञ का आयोजन किया। पंडित रामदू जी और पंडिता प्रेमदा लीलकन्ठ जी ने यज्ञ सम्पन्न किया। फ़्लाक प्रान्त के वरिष्ठ पुरोहित, श्री शिवशंकर रामखेलावन जी, पंडिता कुँजा जी और पंडिता बुझावन जी भी उपस्थित थीं।

आर्यसभा के प्रधान डॉक्टर उदयनारायण गंगू जी, महामन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम जी, उपप्रधान श्री हरिदेव रामधनी जी, डी.ए.वी. कालेज के मानेजर, श्री उदन जी और पंडित दयबू जी ने इस कार्य की शोभा बढ़ाई। आर्य महिला मण्डल की प्रधाना एवं फ़्लाक ज़िला परिषद् की प्रधाना श्रीमती धनवन्ती रामचरण जी, पूर्वसेविका श्रीमती लोबीन जी, श्रीमती कासिया जी, श्रीमान् दोमा जी, श्रीमान् प्रभाकर जीऊत जी और श्रीमान् बालगोबिन जी भी उपस्थित थे। इस समारोह के बीच क्वीन विक्टोरिया गाँव के प्रधान एवं अन्य महानुभाव भी उपस्थित थे, जिनका पूरा सहयोग रहा। अतिथियों तथा कर्मठ सदस्याओं का स्वागत भी किया गया। इस कार्य को सुन्दर बनाने में फ़्लाक आर्य ज़िला परिषद् का सहयोग रहा। श्रीमती धनवन्ती रामचरण जी का हाथ हमेशा आगे रहता है।

बारी-बारी से सभी वक्ताओं ने सुन्दर व्याख्यान देते हुए आर्य महिला समाज की प्रशंसा की। सभा-मन्त्री सत्यदेव प्रीतम जी का भाषण जोशीला था और उपप्रधान हरिदेव रामधनी जी का उपदेशात्मक। आर्य सभा के प्रधान डॉक्टर उदय नारायण गंगू जी ने **'ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता ......'** वेद मन्त्र के माध्यम से अपना सन्देश दिया। उन्होंने बताया कि जैसे वेद माता अपनी सन्तानों को द्विज बनने की प्रेरणा देती है, वैसे ही माता अपने घर को मन्दिर बनाकर अपनी सन्तानों को धार्मिक शिक्षण की ओर बढ़ाती है, तभी जाकर गृहस्थ का यज्ञ सफल होता है। समाज की सदस्याओं ने सुन्दर भजन भी प्रस्तुत किये ।

नारी शक्ति सचमुच महान् है। पच्चीस साल बीत चुके। अब वे चाहती हैं कि उनका स्वयं एक समाज हो, जहाँ पर वे आराम से अपनी गतिविधियों का आयोजन करें । इस सुन्दर आयोजन का लक्ष्य यही था कि समाज मंदिर बनाने के लिए एक टुकड़ी ज़मीन मिले। सभा के अधिकारियों ने अपने-अपने विचार तथा शुभ-कामनाएँ प्रस्तुत कीं। दान-दाताओं से अपील भी की गई।

अन्त में धन्यवाद समर्पण के पश्चात् भोजन से सबका सत्कार किया गया। आर्य महिला समाज सभी को तहे दिल से धन्यवाद करता है।

एक दिव्य एवं आदर्श व्यक्ति

एक दिव्य व आदर्श व्यक्ति या उसका व्यक्तित्व कैसा होता है? अच्छी और सच्ची शिक्षा, अच्छा और सात्विक ज्ञान कहाँ से प्राप्त करता है? वैदिक परम्परा के गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से !

सर्वप्रथम ऐसी शिक्षा पद्धति होनी चाहिए, जिससे मानव को त्याग, तप, शिष्ट आचरण, शिष्टाचार, अच्छा व्यवहार, श्रद्धा देश प्रेम, धर्म प्रेमी, मातृ भाषा के ज्ञांता, सुसंस्कारी, सार्वभौमिक, प्रामाणिक ज्ञान और पंथ निरपेक्ष रूप से गुरुकुल में पढ़ाती है।

जो शिक्षा ऋषि परम्परा से चली आ रही है। जो मानव कल्याण हेतु ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा हो। परन्तु आज ये सब आधुनिक चमक-दमक की आर में लुप्त प्रायः हो गई है।

वह जगह होनी चाहिए जहाँ ब्रह्मचारी रूप में, विद्यार्थियों का सर्वांगिन विकास, शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक रूप से किया जाता है। उन्हें जीना सिखाया जाता है, सेवा करना माता-पिता एवं गुरु तथा परिवार की साधना के साथ सिखाता है।

गुरुकुल के छात्र-छात्राएँ ब्रह्मचारी निरापद रूप से जीना सीख जाते थे। सत्य, प्रेम, करुणा, दया एवं दिव्यता से भर जाते थे। परन्तु आज के आधुनिक समाज व परिवार में इसकी कमी पायी जाती है।

आज तक प्रायः किसी ने भी गुरुकुल के विद्यार्थी को आत्महत्या जैसा घृणित कर्म करते न सुना होगा। उसके जीने का ढंग, स्तर उच्च व दूसरों से भिन्न होता है। वेद-शास्त्र, ऋषि ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त कर उसे सही-ग़लत, धर्म-अधर्म, सत्यासत्य का विवेक भली-भाँति होता है, आहार, विचार व व्यवहार से सात्त्विक होते हैं।

गुरुकुल के ब्रह्मचारी की महिमा वेद ने गाई है। देवता व ऋषियों ने भी गाई है और जितना कहें उतना कम है।

एक आदर्श व्यक्ति के कठिन जीवन क्रीड़ावत होता है। किन्तु उसके पुरुषार्थ के कारण उसका जीवन सहज और सरल हो जाता है। वह आत्मविश्वास से परिपूर्ण लाखों का आश्रयदाता होता है। सनाथ होता है। उसके निर्णय में स्थिरता और परिणाम में संतुष्टि होती है। वह भारी दुखों में भी प्रसन्नचित्त व अडिग रहता है। सब कुछ उसे प्राप्त होता है और देवता भी उसकी मदद करने के लिए आतुर रहते हैं। सारी दैवीय सत्ता उसके साथ रहती है, कोई भी न्यून्ता नहीं रहती फिर आत्मा-हत्या का सवाल ही नहीं उठता ।

अथर्ववेदों के ब्रह्मचर्य सूक्त की घोषणा है –

ब्रह्मचारीष्णंश्चरति रोदसि
उभेतस्मिन्देवाः समनसो।
स दाधार पृथिवीं दिवं च स आचार्यं
तपसा पिपर्ति ।।

हमारे समाज के लोगों में क्यों श्रेष्ठता की कमी आ गई। वह ऋषि परम्परा कहाँ लुप्त हो गई। वह वैदिक ज्ञान, वह सत्य ज्ञान, वह सच्ची शिक्षा कहाँ खो गई ?

अपने जीवन को दिव्य बनाने के लिए अभाव में भी जी कर, अपने जीवन को दिव्य, शुद्ध, पवित्र और सात्त्विक बनाना है। क्रिया-योग, ध्यान-योग, सत्संग व गुरुओं के सानिध्य में रहकर चरित्र निर्माण करना है। पवित्र आत्मा निर्माण होगा तब जाकर मानव एक दिव्य एवं आदर्श व्यक्ति बन पायेगा और जीवन तब जाकर सफलता पायेगा।

डॉक्टर विनय सितिजोरी
(कास्तेल)

कोपं न गच्छन्ति हि सत्त्ववन्तः

सत्त्ववान् मनुष्य को क्रोध नहीं करना चाहिए

श्रीमती डॉ० चेतना शर्मा बद्री

क्रोधित मनुष्य को कोई फ़ैसला नहीं लेना चाहिए क्योंकि क्रोध अंधा होता है और मनुष्य के विवेक को हर लेता है। क्रोध के कारण वह सोचने-समझने की शक्ति खो देता है, वो अपने - पराए का भेद करने में असमर्थ होता है। क्रोधित अवस्था में लिया गया कोई निर्णय उसके विरुद्ध हो सकता है। और उन निर्णयों के कारण भविष्य में प्रायश्चित करना पड़ सकता है। दुर्वासा ऋषि के क्रोधित स्वभाव के कारण शकुंतला एवं दुष्यन्त को वियोग सहन करना पड़ा। क्योंकि – **अतिरोषाणश्चक्षुष्यन्ध एव जनः (हर्षचरित)** अति क्रोधी मनुष्य आँख वाला होते हुए भी अंधा ही होता है ।

इस प्रकार जब मनुष्य किसी विशेष उपलब्धि अथवा किसी कारण से प्रसन्न हो तब उसे किसी को भी वचन नहीं देना चाहिए। जब व्यक्ति अधिक प्रसन्न होता है तब वह अपने होश में नहीं रहता है। उसके पैर ज़मीन पर नहीं होते, वह बिना पंख उड़ने लगता है। राजा दशरथ ने बिना सोचे समझे रानी कैकेयी को दो वरदान देने का वचन दिया था जिसके कारण उनके प्राण गए व राम को चौदह वर्ष का वनवास मिला, सब कुछ अलग-थलग उल्टा-पुल्टा हो गया। बिना सोचे समझे वचन देने के कारण पूरे राज्य में छाया आनन्द और उत्सव का वातावरण शोक सन्तप्त हो गया। इस प्रकार भावनाओं में बहकर किये गये निर्णय मन का जंजाल बन जाते हैं। अपने व दूसरों के दुख का कारण बन जाते हैं। यह बात स्मरण रहे कि सोच-समझकर लिए गये निर्णय से किसी के सामने भी आपको नीचा नहीं देखना पड़ेगा न ही लज्जा उठानी पड़ेगी ।

यदि कोई व्यक्ति किसी कारणवश क्रोध दिलाना चाहे तो उसकी बात नहीं सुननी चाहिए। यदि वह आपको क्रोध दिलाने में सफल हो गया तो निश्चित मानिए कि आप उसके हाथ की कठपुतली बनते जा रहे हैं। इस प्रकार वह आपसे कोई भी नैतिक-अनैतिक कार्य करवा सकता है। क्रोध और प्रसन्नता मानव के मन की दो अवस्थाएँ हैं। क्रोधित और प्रसन्न होने पर अपना 'आप' नहीं खोना चाहिए। अत्यधिक क्रोध और प्रसन्नता दोनों ही अवस्थाओं में मनुष्य में प्रतिशोध की भावना जागृत होती है, क्योंकि प्रसन्नता और से अहंकार से क्रोध और क्रोध कई दुर्भावनाओं का जन्म होता है।

ऐसे कई उदाहरण देखने में आते हैं जहाँ भावातिरेक में व्यक्ति बड़े-बड़े अपराध कर बैठते हैं जिसके कारण अपने आप कानून के अपराधी बनकर सारी उम्र दुख में बिताते हैं। घर-परिवार और समाज उनके कृत्यों की भत्सना करते नहीं थकते। कभी-कभी प्रसन्नता भी मनुष्य के सिर चढ़कर बोलने लगती है। बहुत लोगों को खुशी रास नहीं आती, प्रसन्नता के पलों में उनका दिमाग़ सातवें आसमान पर पहुँच जाता है। बस पतंग की तरह उड़ते हैं और सोचते हैं उनकी डोर काटने का साहस किसी में नहीं है। परन्तु याद रखना चाहिए गुब्बारा जितनी जल्दी फूलता है और सुन्दर दिखाई देता है यदि उसमें कोई एक छोटी सी पिन चुभो दे तो सारी हवा निकल जाती है और फिर से फूलने के लायक नहीं रहता।

प्रसन्नता के आवेग में भी मनुष्य कभी-कभी ग़लत फ़ैसले ले लेता है जो भविष्य में परेशानी का कारण बन जाते हैं। इस प्रकार सुख ही दुख का कारण बन जाता है, वह मूक दर्शक बनकर देखता रहता है। क्रोध के आवेग और प्रसन्नता दानों ही परिस्थितियों में मनुष्य को स्वयं पर नियन्त्रण रखना चाहिए क्योंकि क्रोध को यमराज का दूसरा रूप भी कहा गया है और अत्यधिक प्रसन्नता भी विनाश का कारण बन जाती है। इसलिए दोनों ही परिस्थितियों से यत्नपूर्वक बचना चाहिए, इसी में समझदारी है और सबका कल्याण है ।

क्षोभं प्रयाता अपि नैव सन्तो
दुष्टामशिष्टां गिरमुद्गन्ति ।
दुष्टाः प्रसन्नाअपि शीलयुक्तां वक्तुं न
जातु प्रभवन्ति वाचम् ।।

सज्जन क्षुब्ध होने पर भी अशिष्ट और दुष्ट वाणी का व्यवहार नहीं करते । दुष्ट लोग प्रसन्नता में भी शीलयुक्त वाणी को कभी नहीं बोलते ।

वेद की चर्चा (लघु सन्देश)

श्रीमती यमावन्ती चूड़ामणि

श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में समाजों एवं घरों में ज्यादातर हवन और वेद मन्त्रों पर ज़ोर दिया जाता है। वेद पढ़ने के लिए लोगों को प्रोत्साहन दिया जाता है। लेकिन हमें पता होना चाहिए कि वेद क्यों पढ़ना चाहिए, इससे क्या लाभ होता है। ये किसके लिए लिखे गये हैं कि ऋषिगण बताते हैं कि वेद मन्त्रों के पठन, श्रवण और मनन करने से मन एकाग्र, शान्त और ज्योतिर्मय हो जाता है। मस्तिष्क सद्ज्ञान से परिपूर्ण हो जाता है। वेद के अध्ययन करने से कर्मशील मनुष्यों को पवित्रता, लम्बी आयु और सुसन्तान की प्राप्ति होती है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है जिससे मानव जीवन उत्कृष्ट और उज्ज्वल बनता है। इसका अध्ययन करना और करवाना हर एक मनुष्य का परम धर्म है। श्रावणी उपाकर्म याने कि वेद मास हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मास हमें अपने जीवन को ऊँचा उठाने का अवसर देता है, दिव्य कार्यों की ओर हमें आकर्षित करता है तथा वेद प्रचार करने का मौका देता है। वेद का अध्ययन करके उनके अनुसार चलने से मानव को एक दूसरे से ईर्ष्या, द्वेष, जलन, घृणा तथा विरोध आदि की भावना नहीं होती है। मनुष्य नेक, सुशील, सभ्य और गुणवान् बनता है। जीवन सुखमय और शान्तिमय होता है। जीवन की अनेक समस्याओं का हल मिलता है। कई प्रसिद्ध विद्वान् वेद से प्रभावित होकर लिखते हैं – वेद ही सच्चे ज्ञान का एकमात्र भण्डार है। इसकी तुलना किसी अन्य ग्रन्थ से नहीं हो सकती है। वेदों में संसार की सभी विद्याएँ बीज रूप में वर्णित हैं। युरोप का एक प्रसिद्ध विचारक अपनी शान्ति का मार्ग नामक पुस्तक में लिखता है – वैदिक आदर्शों पर चलने से ही संसार फिर स्वर्ग और रामराज्य बन सकता है। अमेरिका का एक महान् विचारक, वेदों का स्वध्याय करने के बाद लिखता है – वेदों की विचारधारा पवित्रतम है। इसमें प्रकाश, ज्ञान और विज्ञान है। यह सार्वजनिक, सार्वदेशिक और सर्वकालिक है। ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण वेद परिपूर्ण है। इसमें न कोई दोष है न कोई कमी।

सभी घरों में वेद का होना आवश्यक है। वेद केवल अलमारी में सजावट के लिए नहीं है बल्कि इसे पढ़कर जीवन में उतारने के लिए है। वेद ही एकमात्र साधन है जिससे अपना और अन्यों का निष्पक्ष भाव से कल्याण हो सकता है। श्रावणी महापर्व मनाना तभी सार्थक होगा जब हम वेदों का अध्ययन करने के लिए तथा अपने जीवन को वेदानुकूल बनाने के लिए दृढ़ संकल्प कर लें। अज्ञानता और मूर्खता से निकलकर वैदिक ज्ञान के प्रकाश में आवें ।

Book Review

'Under the breadfruit tree'

Anthology of poems by B. Nowbuthsingh

By Dr Indradev Bholah Indranath, P.B.H.

"We spend the first half of our lives trying to understand the older generation and the second half trying to understand the younger generation." (Earl Wilson)

'Under the breadfruit tree' is an anthology of poems written by Balwantsingh Nowbutsingh depicting about the childhood and the boyhood reminiscences of the author. The book is written in impeccable English language. Indeed Balwantsingh has a good command of English and possesses a vast knowledge of English words which he has proficiently used in his poetry writing.

Balwantsingh is a graduate, holding M.A. Degree from Banaras University India. He had a penchant for writing and could not resist the call of his pen. Being also well versed in Hindi he had at the outset written and staged dramas in Hindi. When he was studying in India he had published 'Vishwa Darpan' a collection of Hindi poems contributed by poets of different countries of the world.

Now coming to his new book 'under the breadfruit tree' he emphasises that his infancy and boyhood were centered around the breadfruit tree in his yard. Anytime he felt unsecure, he would hang to it. It gave him solace, as though he hugged to his father. The breadfruit tree is his infancy and boyhood at his birth place, Bel Ombre.

Writing a book on passed events are evidently not easy because the memory may fail to recall all passed events, which having not included may pain the writer himself later. Nowbuthsingh ventured to write it pondering on all factual incidents not only personal but those of his grand father, father, mother and other family members as well. The book is not a piece of prose writing but a work in poetry which has rendered the task more difficult. He has written the poems impressively. When Balwantsingh was a child his father nick named him 'Bonom' and now while writing the poems Balwantsingh has focused all upon Bonom characterising all events of his boyhood for example – A village at night :

"Bonom, admonished by his father, decided to go for a walk.
Round the village, at about seven-thirty in the evening.
This time alone, in order to sooth his mood
For he used to go on walk in the company of his friend, Suresh.
His heart was bleeding with affliction and eyes were wet with tears.

Not for fame that a poet writes
He tries to express his vision of life, and his skill
With an aromatic warmth, in his style.
In metric feat or in blank and free verse.

Nowbutsingh writes in simple English and coherent words apt to the verses.

The writer has wisely classified the contents of the book in 8 chapters as follows :

Chapter I : Culture and Traditions, Chapter II : The mother and the child, Chapter III : Love, Chapter IV : Seasons and animals' life, Chapter V : Time and mortality, Chapter VI : People, Chapter VII : Miscellaneous and Chapter VIII : Patriotism.

Evidently the contents are worth reading and some of them are thought provoking.

We Are All Powerful !

By Sookraj Bissessur

"I am the most powerful and like the sun I illuminate the entire creation. I am never vanquished. Neither I die nor I am eternal. I am the creator of all wealth, which you see in the universe. Know me as the creator of the entire universe. While continuing your efforts to grow prosperous and mighty, ask me for knowledge and do not drawn away from my friendship."

Maharshi Dayanand Saraswati
Quotes from the Rig Veda

When life may be pulling you up and down, simply always do keep your spirits uplifted, for we are (all) very powerful.
We have the power to surprise someone.
With a sincere and divine act of kindness, that's entirely, unexpected and totally delightful.
We have the huge power to give a helping hand or an encouraging word to those who need it most.
We have the absolute power to set our sights on a goal then do what is necessary to reach it.
We have the power to take an ordinary moment and make it special.
We have the power to forgive and forget.
We have the power to deal, feel and appreciate.
We have the power to express ourselves and the power to learn and listen.
We have the power to teach, preach and practice.
We have the power to look at a problem and to find a good solution.
We have the immense power to set right what's wrong and make a positive difference.
Now, that's as powerful as we can possibly be.
Exercise your power!
So, let's retain in mind that God gives but Man gets and forgets!

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं । लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

Actualités : Conseil des Religions

La conférence annuelle des chefs religieux du mardi 27 Septembre 2016 au Le Labourdonnais Hotel, Port Louis

Nous reproduisons l'essentiel des interventions du Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanāchārya, représentant l'Arya Sabha Mauritius

1ère session : revue des projections vidéo

La connaissance (reconnaitre l'appartenance ethnique) de la personne en face de nous est souvent source de méfiance et l'ignorance de cette identité ne soulève aucun préjugé. Cette situation est à l'opposé des valeurs fondamentales prônées par la religion, c'est-à-dire les valeurs humaines ou la spiritualité qui est au-dessus de la chose dite 'religieuse'.

L'ouverture envers les autres doit être créative et non destructive. On doit accepter les faits que la pratique du culte de chaque religion est différente mais la spiritualité peut créer le lien (*bonding*) entre les composantes d'une l'ile Maurice arc-en-ciel.

Tout comme l'universalité du son de nos prières qui calme nos esprits et nos émotions les valeurs humaines universelles nous soutiennent en tant que 'les repères de la vie'.

Le partage des repas, gâteaux, douceurs et autres friandises pendant les fêtes a toujours existé et a dans sa manière tissé liens transcendant les religions, races et couleurs. De nos temps 'modernes' cette tradition est devenue plus …le voire-faire …le quoi-faire (*lip-service*). Les critiques de l'un et de l'autre est en somme l'équivalent des coups de pioche dans un trou qui s'agrandisse. Le dialogue interreligieux demande beaucoup de compréhension. Nous devons définir nos priorités et non pas nous laisser dominer par les pratiques de nos jours ou les accessoires sont plus importants que l'essentiel.

2ème session : comme rapporteur d'une des groupes de réflexion sur les défis du dialogue interreligieux

La compréhension mutuelle

La compréhension mutuelle passe impérativement par l'apprentissage de sa religion et ensuite connaitre celle de son prochain. Cela passe par une relecture des textes, la réflexion et l'application des concepts dans la vie, pas juste le temps de la prière.

Les points communs serviront de fil conducteur vers la compréhension mutuelle, ainsi une plus grande solidarité au lieu de pointer le doigt aux autres … digging will only increase the size of the hole, building bridges on the universal human values will bridge the gap.

Approcher quelqu'un qui est autrement croyant

Le stigma dans cette approche est la suite logique de l'ignorance, la peur de partager l'information, d'expliquer nos pratiques, la peur d'offenser l'autre par nos questions.

L'approche dépasse le cadre de la tolérance car la tolérance est surtout liée aux choses qui sont forcées sur une personne. Par contre l'acceptation engage en premier notre esprit dans la sagesse et le respect mutuel, et l'accueil de l'autre qui se traduira dans les paroles et la façon d'agir ou de faire. Ainsi on arrivera à mieux se connaitre et agir en tant qu'être humain.

Le dialogue est un dialogue …pas un monologue (not a one-way-traffic). Il ne faut pas mélanger les concepts, imposer ses idées, s'immiscer ou s'ingérer dans les différents pratiques …il faut que les principes universelles (la non-violence, la recherche de la vérité …etc.) priment à tout moment, donc plus de compréhension et d'entraide.

Combattre les préjugés

L'éducation de tous (enfants, jeunes, adultes, âgées) doit absolument inclure les valeurs humaines universelles. Une croissance en capacité et intensité de la spiritualité découlera de cette approche holistique. L'effet boule de neige de cette action sera le rétrécissement du refus d'accepter les différences, souvent désigné comme l'intolérance.

Le dialogue interreligieux

Le dialogue interreligieux est une nouvelle expérience à Maurice. Dix années dans ce parcours est peu. Il faut plus de recherches, plus d'ouvertures, plus de collaboration sur la chose spirituelle que religieuse dans le respect mutuelle. Ainsi le procédé sera un exercice d'enrichissement de l'être humain.

On regarderait plus les *'common denominators'* qui sont les valeurs universelles de la vie humaine au lieu de se polariser sur les différences.

Ile Maurice, état insulaire

Chacun a ses bagages remplies ou surchargées. Les valeurs universelles de la vie humaine nous permettront de faire le tri, c'est-à-dire valoriser l'être humain chez son prochain.

Comme dans une course, le point de départ du dialogue interreligieux demeure le premier pas …menant à la rencontre de l'autre …enrobé de la vérité, l'humilité et le respect.

La rédaction

ब्रह्मचर्य

रामावध राम

जब वीर्य का संञ्चय होता है तब शरीर दिन-प्रतिदिन दृढ़ होता चला जाता है। वीर्य से अगली धातुएँ ओज तेज़ होकर बुद्धि का विकास होता चला जाता है। जब तक शरीर में वीर्य बढ़ता है तभी तक स्मृति बढ़ती है। वीर्य के क्षय होते ही स्मृति का क्षप होना प्रारम्भ हो जाता है। जैसे-जैसे वीर्य क्षय होता चला जाता है, वैसे-वैसे स्मृति समाप्त होती जाती है। वीर्य के अभाव से तेज़-बल का अभाव हो जाता है। इस लिए ब्रह्मचारी लोग बलिष्ठ होते हैं। उनमें काम करने के फूर्ति होती है । वे सदा हँसमुख और तेजस्वी मालूम पड़ते हैं। उन्हीं पर समाज हमेशा निर्भर होता है।

स्वामी दयानन्द ने मानव समाज का कैसे सुधार किया ? ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए । बहुत से स्वामी हुए, पर दुश्मन का सामना करने में स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम प्रमुख है। याद कीजिएगा ब्रह्मचर्य के बल पर आप किसी से भय नहीं रखेंगे । केवल अपने ब्रह्मचर्य पर विश्वास रखेंगे ।

Sanskar is that which contributes to the physical, mental and spiritual improvement of man. From Conception to Cremation there are sixteen Sanskars altogether. I hold that their due and proper observance is obligatory on all. Nothing should be done for the departed after the remains have been cremated.

Maharshi Dayanand Saraswati
Light of Truth